HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-III (Mediaeval Indian History)

Unit-II (Alauddin Khilji's empire expansion in Deccan)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 28

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को CLICK करें ☐☐☐।

https://youtu.be/OKkd4FnHI9Q

"दक्षिण भारत में अलाउद्दीन खिलजी का साम्राज्य विस्तार"

(Alauddin Khilji's empire expansion in Deccan)

अलाउद्दीन की दक्षिण विजय .

अलाउद्दीन की समकालीन दक्षिण भारत की 3 महत्वपूर्ण शक्तियां थीं–

(1) देवगिरी के यादव,

(2) दक्षिण पूर्व के तेलंगाना के काकतीय,

(3) दक्षिण–पश्चिम तेलंगाना के होयसल ।

अलाउद्दीन द्वारा दक्षिण भारत के राज्यों को जीतने के उद्देश्य के पीछे धन की चाह एवं विजय लालसा थी। वह इन राज्यों को अपने अधीन कर वार्षिक कर वसूल करना चाहता था। दक्षिण भारत की विजय का मुख्य श्रेय 'मलिक काफूर' को ही जाता है।

Dr.Guddy Kumari (A.N.D College)

✓ देवगिरि (1307–08) –

अलाउद्दीन द्वारा 1292 में देवगिरि के विरुद्ध किये गये अभियान की सफलता पर वहां के शासक रामचन्द्र देव ने प्रति वर्ष कर देने का वायदा किया था पर रामचन्द्रदेव के पुत्र शंकर देव (सिंहन देव) के हस्तक्षेप से वार्षिक कर का भुगतान रोक दिया गया। अतः नाइब मलिक काफूर के नेतृत्व में एक सेना को देवगिरि पर धावा बोलने के लिये भेजा गया रास्ते में राजा कर्ण को युद्ध में परास्त कर काफूर ने उसकी पुत्री देवल देवी, जो कमला देवी एवं कर्ण की पुत्री थी, को दिल्ली भेज दिया जहां पर उसका विवाह खिज्र खां से कर दिया गया। रास्ते भर लूट पाट करता हुआ काफूर देवगिरि पहुंचा और पहुंचते ही उसने देवगिरि पर आक्रमण कर दिया । भयानक लूट–पाट के बाद रामचन्द्र देव ने आमसमर्पण कर दिया। काफूर ने अपार सम्पत्ति, ढेर सारे हाथियों एवं राजा रामचन्द्र देव के साथ वापस दिल्ली आया। रामचन्द्र के सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत होने पर सुल्तान ने उसके साथ उदारता का व्यवहार करते हुए राय रायन' की उपाधि प्रदान की। उसे सुल्तान ने गुजरात की नवसारी जागीर एवं एक लाख स्वर्ण टंक देकर वापस भेज दिया । कालान्तर में राजा रामचन्द्र देव अलाउद्दीन का मित्र बन गया।

✓ तेलंगाना–

यहां का शासक 'प्रताप रुद्रदेव' था जिसकी राजधानी वारंगल थी। नवम्बर 1309 में काफूर तेलंगाना के लिए रवाना हुआ। रास्ते में रामचन्द्र देव ने काफूर की सहायता की । 1310 में काफूर अपनी सेना के साथ वारंगल पहुँचा। प्रतापरुद्र देव ने अपनी एक सोने की मूर्ति बनवाकर गले में एक सोने की जंजीर डालकर आमसमर्पण स्वरूप काफूर के पास भेजा, साथ ही 100 हाथी, 700 घोड़े, अपार धन राशि एवं वार्षिक कर देने के वायदे के साथ अलाउद्दीन की अधीनता स्वीकार कर ली। सम्भवतः इसी समय संसार प्रसिद्ध 'कोहनूर' हीरा को प्रताप रुद्रदेव ने काफूर को दिया । काफूर ने इसे सुल्तान अलाउद्दीन को सौप दिया।

✓ होयसल–

यहां का शासक वीर बल्लाल तृतीय था । उसकी में राजधानी द्वार समुद्र थी। 1310 में मलिक काफूर ने होयसल के लिए प्रस्थान किया। 1311 में साधारण युद्ध के पश्चात बल्लाल देव ने आत्मसमर्पण कर अलाउद्दीन की अधीनता ग्रहण कर ली। इसने माबर के अभियान में काफूर की सहायता भी की। सुल्तान अलाउद्दीन ने भल्लालदेव को 'खिलअत' एक मुकुट', 'छत्र' एवं दस लाख (टंके की थैली भेंट किया।

✓ पाण्ड्य–

इसे माबर (मालाबार) के नाम से भी जाना जाता था। यहां के शासक सुन्दर पाण्ड्य एवं वीर पाण्ड्य थे। दोनों में हुए सत्ता संघर्ष में सुन्दर पाण्ड्य पराजित हुआ । सुन्दर पाण्ड्य द्वारा सहायता मांगने पर काफूर ने 1311 में पाण्ड्यों के महवपूर्ण केन्द्र वीरधूल पर आक्रमण कर दिया। पर वीर पाण्ड्य हाथ नहीं आया । काफूर ने बरमत पती में स्थित 'लिंग महादेव के सोने के मंदिर में खूब लूट–पाट की। इसके अतिरिक्त ढेर सारे मंदिर इसके द्वारा लूटे एवं तोड़े गये। 1311 में काफूर विपुल धन संपत्ति के साथ दिल्ली पहुचा परन्तु उसे वीर पाण्डय को पकड़ने में सफलता नहीं प्राप्त नही हुई थी। सम्भवतः धन की दृष्टिकोण से यह काफूर का सर्वाधिक सफल अभियान था।

✓ देवगिरि का द्वितीय अभियान (1312):

Dr.Guddu Kumari (A.N.D College)

देवगिरी के शासक रामचन्द्र देव की मृत्य के बाद उसके पुत्र शंकर देव' (सिंहन देव) ने दिल्ली से सम्बन्ध तोड़ लिया । अतः 1313 में काफूर को पुनः देवगिरि भेजा गया । युद्ध में शंकर देव मारा गया। देवगिरि का अधिकांश भाग दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया। 1315 में काफूर को वापस दिल्ली बुला लिया गया। इस तरह अलाउद्दीन का साम्राज्य पश्चिमोत्तर भाग में सिन्धु नदी से लेकर दक्षिण में मदुरै तक पूर्व में वाराणसी एवं अवध से लेकर पश्चिम में गुजरात तक विस्तृत था।

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!!

Dr.Guddy Kumari (A.N.D College)